Topic 27 – हल् सन्धि – अनुनासिक ।,

मोऽनुस्वारः ।

मान्तस्य पदस्यानुस्वारो हलि । हरिं वन्दे ।

मकार के स्थान पर अनुस्वार होने के लिए दो बातों का होना आवश्यक है :-

1 मकार के पश्चात कोई व्यञ्जन होना चाहिए – उदाहरण के लिए 'तम् + आगच्छति' में पदान्त मकार तो है, किन्तु उसके पश्चात स्वर-आकार है, व्यञ्जन नहीं । अतः यहाँ मकार को अनुस्वार न हो । तमागच्छति रूप बनता है।

उस मकार को पद के अन्त में होना चाहिए – उदाहरणार्थ 'गम्यते' में मकार के पश्चात व्यञ्जन - यकार तो है, किन्तु यह मकार पदान्त नहीं है। अतः प्रकृत सूत्र से इस अपदान्त मकार को अनुस्वार नहीं होता और 'गम्यते' रूप ही रहता है।

नश्चापदान्तस्य झलि ।

नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः । यशांसि, आक्रंस्यते । झलि किम् - मन्यसे ।

यह सूत्र मोऽनुस्वारः का अपवाद है । दोनों सूत्रों का सम्मलित अर्थ होगा । पदान्त और अपदान्त मकार को झल् परे रहते अनुस्वार होता है, किन्तु अन्तःस्थ तथा वर्गों के अनुनासिक वर्ण परे रहके केवल पदान्त मकार को अनुस्वार होता है अपदान्त को नहीं ।

PTO

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

स्पष्टम् । शान्तः

नश्चापदान्तस्य -० से हुए अनुस्वार के स्थान पर सामान्यतया प्रकृत सूत्र अनुस्वारस्य-०, से पर सवर्ण हो जाता है, केवल श, ष स और ह परे होने पर ही अनुस्वार रहता है।

वा पदान्तस्य ।

त्वङ्करोषि, त्वं करोषि ।